सत्यमेव जयते
Ministry of Education
Government of India

CyberPeace

एन सी ई आर टी
NCERT

सूचना अखंडता के मूल सिद्धांत।

Information Integrity Fundamentals

सही जानकारी ही सही निर्णय की नींव है। आज हम सीखेंगे कि जानकारी को **कैसे परखें, कैसे सँभालें** और ज़िम्मेदारी से आगे कैसे बढ़ाएँ।

4 विषय

4 क्विज़ · हर विषय के बाद

01 सटीकता, प्रामाणिकता और विश्वास

02 सूचना जीवन-चक्र और डेटा सत्यनिष्ठा

03 स्रोत और सामग्री की जाँच

04 डिजिटल संचार में सत्यनिष्ठा

CYBERPEACE · INDIA

आपका स्वागत है

साझेदारी

यह सत्र CIET–NCERT एवं CyberPeace Foundation के संयुक्त सहयोग से आयोजित प्रशिक्षण शृंखला की पहली कड़ी है।

किसके लिए

शिक्षक, विद्यालय नेतृत्व, विद्यार्थी एवं अभिभावक — सभी डिजिटल सूचना परिवेश के सक्रिय भागीदार।

उद्देश्य

आज का सत्र नींव है — सूचना अखंडता की बुनियादी समझ, जिस पर शृंखला के आगामी सत्र आधारित होंगे।

नीतिगत संदर्भ: यह प्रशिक्षण क्यों

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020

- अध्याय 23 (23.1–23.8): शिक्षण, आकलन व प्रशासन में तकनीक के सुरक्षित, नैतिक व समावेशी उपयोग पर बल।
- डिजिटल अधिसंरचना, शिक्षक क्षमता निर्माण व शोध-नवाचार को प्रोत्साहन।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF-SE) 2023

- डिजिटल साक्षरता, डिजिटल नागरिकता व समालोचनात्मक चिंतन को आवश्यक दक्षता के रूप में मान्यता।
- मीडिया व सूचना साक्षरता तथा उत्तरदायी तकनीक उपयोग पर विशेष ज़ोर।

बदलता सूचना परिवेश

सोशल मीडिया व एल्गोरिद्म-चालित प्लेटफॉर्म्स ने सूचना के निर्माण, प्रसार व उपभोग के तरीके को मूल रूप से बदल दिया है।

अवसर

संचार, शिक्षण-अधिगम व सहभागिता के नए दरवाज़े खुले हैं।

चुनौती

मिसइनफॉर्मेशन, डिसइनफॉर्मेशन व मलइनफॉर्मेशन का प्रसार अभूतपूर्व गति से बढ़ा है।

नई जटिलता

जनरेटिव AI ने अति-यथार्थवादी डीपफेक व सिंथेटिक मीडिया को जन्म दिया है (UNESCO 2023; OECD 2024)।

यह क्यों महत्वपूर्ण है

व्यक्ति के लिए

सही व सत्यापित जानकारी के आधार पर जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय लेना संभव होता है।

शिक्षण संस्थानों के लिए

विश्वसनीय शिक्षण-अधिगम वातावरण एवं शोध की गुणवत्ता सुनिश्चित होती है।

समाज के लिए

लोकतांत्रिक विश्वास, सामाजिक सद्भाव व संस्थानों की विश्वसनीयता की रक्षा होती है।

यह सत्र क्यों ज़रूरी है

जानकारी अनमोल है — जब तक वह सही है।

नींव

हर निर्णय जानकारी पर टिका है

क्या पढ़ना है, किस पर भरोसा करना है, क्या आगे भेजना है — सब जानकारी से तय होता है।

जोखिम

गड़बड़ जानकारी, गड़बड़ निर्णय

बदली हुई, अधूरी या पुरानी जानकारी अच्छे-भले निर्णय को भी ग़लत दिशा दे देती है।

उपाय

कुछ आसान आदतें काफ़ी हैं

डरने की कोई बात नहीं — बस भेजने या मानने से पहले एक छोटी-सी जाँच।

मूल मंत्र

रुकिए, परखिए — फिर भरोसा कीजिए।

आज की रूपरेखा

आज के चार विषय।

विषय 01

सटीकता, प्रामाणिकता और विश्वास

अच्छी जानकारी की तीन पहचान — और भरोसा कैसे बनता है।

विषय 02

सूचना जीवन-चक्र और डेटा सत्यनिष्ठा

जानकारी बनने से इस्तेमाल तक की यात्रा — और हर पड़ाव पर उसकी रक्षा।

विषय 03

स्रोत और सामग्री की जाँच

कुछ आसान कदम, जिनसे असली और नक़ली का फ़र्क़ साफ़ दिखने लगता है।

विषय 04

डिजिटल संचार में सत्यनिष्ठा

आपका हर संदेश आपके हस्ताक्षर जैसा है — उसे भरोसेमंद बनाना सीखेंगे।

बीच-बीच में

क्विज़ — सच या नक़ल?

चार राउंड — हर विषय के बाद एक। उत्तर अगली स्लाइड पर।

अंत में

मदद कहाँ मिलेगी

हेल्पलाइन 1930, cybercrime.gov.in और PIB Fact Check की जानकारी।

पहले शब्दावली

चार शब्द, जो पूरे सत्र में साथ चलेंगे।

01

सत्यनिष्ठा (Integrity)

जानकारी का सही, पूरा और बिना छेड़छाड़ के होना — जैसी बनी थी, वैसी ही बनी रहे।

02

सटीकता (Accuracy)

तथ्य वैसे ही हों जैसे वास्तव में हैं — नाम, अंक, तारीख़, स्थान सब सही।

03

प्रामाणिकता (Authenticity)

जानकारी सचमुच वहीं से आई हो, जहाँ से आने का वह दावा करती है।

04

स्रोत (Source)

जानकारी का मूल स्थान — किसने, कब और कहाँ सबसे पहले कहा या लिखा।

भारत से उदाहरण

रश्मिका मंदाना डीपफेक मामला

नवंबर 2023

- एक वीडियो में उनका चेहरा AI (GAN तकनीक) की मदद से किसी अन्य व्यक्ति के शरीर पर मॉर्फ़ किया गया, जो वायरल हो गया।
- आंध्र प्रदेश के एक इंजीनियर को कुछ ही सप्ताह में पहचान कर गिरफ़्तार किया गया।
- IPC व IT Act की धाराओं के अंतर्गत कार्रवाई — भारत में डीपफेक विनियमन की दिशा में एक निर्णायक मोड़।

केंद्रीय मंत्री डीपफेक मामला

अगस्त 2026

- केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी को ईंधन नीति में भ्रष्टाचार से जोड़ते हुए AI-निर्मित भ्रामक वीडियो वायरल हुए।
- बॉम्बे हाईकोर्ट ने Meta व Google को वीडियो हटाने तथा जिम्मेदार खातों की जानकारी देने का निर्देश दिया।
- यह दर्शाता है कि डीपफेक अब व्यक्तिगत नहीं — संस्थागत व नीतिगत स्तर की चुनौती बन गया है।

जनरेटिव AI व डीपफेक की भूमिका

निर्माण आसान व सस्ता

यथार्थवादी सिंथेटिक वीडियो, ऑडियो व छवियाँ बनाना अब बिना विशेष तकनीकी कौशल के भी संभव।

गति व स्केल में वृद्धि

भ्रामक सामग्री पहले से कहीं अधिक तेज़ी से व बड़े स्तर पर फैल सकती है।

पहचान कठिन

मानव आँख से असली व नकली में अंतर करना निरंतर कठिन होता जा रहा है।

बढ़ते जोखिम

चुनाव प्रभाव, वित्तीय धोखाधड़ी, प्रतिष्ठा हानि व सामाजिक अशांति जैसे खतरे।

सटीकता, प्रामाणिकता और विश्वास।

भरोसा अपने-आप नहीं बनता — वह सही और प्रामाणिक जानकारी से कमाया जाता है। आइए इन तीनों को आसान भाषा में समझें।

01

अच्छी जानकारी के तीन स्तंभ।

स्तंभ 01

सटीकता (Accuracy)

क्या तथ्य सही हैं? एक ग़लत अंक या पुरानी तारीख़ पूरी बात का अर्थ बदल सकती है।

जाँच: क्या यह बात कहीं और भी इसी रूप में मिलती है?

स्तंभ 02

प्रामाणिकता (Authenticity)

क्या यह सचमुच वहीं से आया है, जहाँ से आने का दावा है? नक़ली पेज असली जैसे दिख सकते हैं।

जाँच: मूल स्रोत की आधिकारिक वेबसाइट पर देखिए।

स्तंभ 03

विश्वास (Trust)

सटीकता और प्रामाणिकता मिलकर विश्वास बनाते हैं। यह धीरे-धीरे बनता है और एक ग़लती से टूट जाता है।

याद रखिए: भरोसा जानकारी की कमाई है, माँग नहीं।

मुख्य बात **तीनों में से कोई एक भी कमज़ोर हो, तो जानकारी पर भरोसा मत कीजिए — पहले जाँचिए।**

छोटी-सी गड़बड़, बड़ा नुक़सान।

ग़लत आँकड़ा

सही ख़बर में एक बदला हुआ अंक — और पूरी बात का मतलब उलट जाता है।

पुरानी फोटो, नया दावा

कई साल पुरानी तस्वीर को आज की घटना बताकर फैलाना — सबसे आम चाल।

काट-छाँट किया गया वीडियो

बात का एक टुकड़ा अलग करके दिखाना, जिससे अर्थ ही बदल जाए।

ध्यान दीजिए

इनमें से किसी में भी पूरा झूठ नहीं है — सच में थोड़ी मिलावट है।

इसीलिए सत्यनिष्ठा (Integrity) का मतलब सिर्फ़ "झूठ नहीं" नहीं — बल्कि "पूरा और बिना छेड़छाड़ का सच" है।

सूचना जीवन-चक्र और डेटा सत्यनिष्ठा।

हर जानकारी एक यात्रा करती है — बनने से लेकर इस्तेमाल होने तक। अच्छी बात यह है कि हर पड़ाव पर उसकी रक्षा के तरीक़े भी आसान हैं।

02

विषय 02 · सूचना जीवन-चक्र (Information Lifecycle)

जानकारी की यात्रा — पाँच पड़ाव।

01 · निर्माण (Create)	02 · भंडारण (Store)	03 · साझा (Share)	04 · उपयोग (Use)	05 · संग्रह (Archive)
जानकारी बनती है	**सहेजी जाती है**	**आगे भेजी जाती है**	**निर्णय में काम आती है**	**पुरानी होती है**
कोई लिखता है, फोटो खींचता है, रिकॉर्ड बनाता है।	फ़ाइल, रजिस्टर, फ़ोन या क्लाउड (Cloud) में रखी जाती है।	संदेश, ईमेल या पोस्ट के रूप में लोगों तक पहुँचती है।	पढ़कर लोग राय बनाते हैं और निर्णय लेते हैं।	समय के साथ जानकारी पुरानी पड़ती है — तारीख़ देखना ज़रूरी है।

मुख्य बात

हर पड़ाव पर जानकारी बदल सकती है — इसलिए भरोसे से पहले पूछिए: यह किस पड़ाव से और किस रूप में मुझ तक पहुँची?

रास्ते में जानकारी कहाँ बिगड़ती है।

01

छेड़छाड़ (Tampering)

कोई जान-बूझकर अंक, नाम या तारीख़ बदल देता है — जैसे स्क्रीनशॉट में बदलाव।

02

संदर्भ से काटना

बात का एक टुकड़ा अलग करके भेजना, जिससे पूरा अर्थ बदल जाता है।

03

नक़ल की ग़लती

बार-बार आगे भेजते समय शब्द बदलते जाते हैं — जैसे कान से कान वाला खेल।

04

पुरानी जानकारी

जो कभी सच थी, वह आज बदल चुकी हो सकती है — बिना तारीख़ की बात अधूरी है।

आसान उपाय जहाँ तक हो सके, मूल (Original) तक जाइए — मूल दस्तावेज़, मूल वेबसाइट, मूल वीडियो।

स्रोत और सामग्री की जाँच।

जाँचना शक करना नहीं है — यह समझदारी है। कुछ आसान कदम, और असली-नक़ली का फ़र्क़ साफ़ दिखने लगता है।

03

भरोसे से पहले — चार कदम।

कदम 1

रुकिए

ग़ुस्सा, डर या जोश महसूस हो, तो समझिए — रुकने का संकेत है। ऐसी ही प्रतिक्रिया के लिए सामग्री बनाई जाती है।

कदम 2

स्रोत देखिए

सबसे पहले किसने कहा? कोई आधिकारिक संस्था, या पिछले हफ़्ते बना कोई अनजान अकाउंट?

कदम 3

मिलान कीजिए

दावे को खोजिए। सच होगा, तो एक से ज़्यादा भरोसेमंद जगहों पर मिलेगा।

कदम 4

मूल तक जाइए

फोटो की उल्टी खोज (Reverse Image Search) कीजिए, पूरा वीडियो देखिए, मूल दस्तावेज़ माँगिए।

सूत्र पक्का न हो, तो आगे मत भेजिए — चुप्पी से कोई अफ़वाह नहीं फैलती।

स्रोत परखने का ढाँचा — क्रैप परीक्षण (CRAAP Test)।

C · नवीनता (Currency)	R · प्रासंगिकता (Relevance)	A · अधिकारिता (Authority)	A · सटीकता (Accuracy)	P · उद्देश्य (Purpose)
कब का है?	**काम का है?**	**किसने कहा?**	**प्रमाण क्या है?**	**क्यों बनाया गया?**
यह कब प्रकाशित या अद्यतन (Update) हुआ? क्या विषय के लिए पर्याप्त नया है?	क्या यह सचमुच आपके प्रश्न से जुड़ा है — सही गहराई और स्तर पर?	लेखक या प्रकाशक कौन है? उनकी योग्यता और साख क्या है?	क्या यह प्रमाणों पर टिका है? क्या पुष्टि कहीं और से हो सकती है?	सूचित करने के लिए — या बेचने, भड़काने या मनाने के लिए?

सूत्र पाँच छोटे सवाल — और सामग्री की असलियत काफ़ी हद तक साफ़ हो जाती है।

फोटो की कुंडली — रिवर्स इमेज सर्च (Reverse Image Search) ।

यह कैसे काम करता है

- संदिग्ध चित्र अपलोड कीजिए या उसका लिंक (Link) डालिए
- टूल पूरे वेब पर मिलते-जुलते चित्र खोजता है
- परिणाम बताते हैं — वह चित्र और कहाँ, कब से दिख रहा है

प्रचलित टूल: Google Images, TinEye, Bing Visual Search

यह क्या उजागर करता है

क्या फोटो पुरानी है और नए दावे के साथ दोबारा चलाई जा रही है — सबसे आम चाल यही है।

मूल तक पहुँच

चित्र का मूल स्रोत और मूल कैप्शन (Caption) — यानी असली संदर्भ — सामने आ जाता है।

ध्यान रहे

बदले हुए चित्र भी पकड़ में आ जाते हैं।

विषय 03 · सत्यापन उपकरण (Verification Tools)

फ़ाइल के भीतर छिपे सुराग।

मेटाडेटा (Metadata / EXIF)

अधिकांश फोटो में छिपी जानकारी होती है — कैमरा या डिवाइस (Device), तारीख़-समय, स्थान और एडिटिंग सॉफ़्टवेयर (Editing Software) ।

फ़ाइल के "Properties / Details" में कोई भी यह देख सकता है — इससे "कब-कहाँ" वाले दावे की पुष्टि या खंडन हो सकता है।

सावधानी: मेटाडेटा हटाया या बदला भी जा सकता है — इसे कई सुरागों में से एक मानिए, अंतिम प्रमाण नहीं।

सामग्री उद्गम (Content Provenance)

नया मानक C2PA फ़ाइल के साथ सुरक्षित, छेड़छाड़-प्रकट इतिहास जोड़ता है — किसने बनाया, कौन से टूल लगे, क्या संपादन हुए।

समर्थित प्लेटफ़ॉर्म पर "Content Credentials" चिह्न से फ़ाइल का सत्यापित इतिहास दिखता है।

यह उपकरण सामग्री को "अच्छा" या "बुरा" नहीं बताता — बस इतिहास सामने रखता है, निर्णय आपका।

ख़तरे के संकेत (Red Flags) — इन पर नज़र रखिए।

- कोई नामित लेखक, प्रकाशक या जाँचने-योग्य स्रोत नहीं
- "हटाए जाने से पहले साझा करें" जैसा आग्रह
- अतिवादी भावनात्मक भाषा या क्लिकबेट (Clickbait) शीर्षक
- दावे जो सच होने के लिए बहुत नाटकीय या बहुत सुविधाजनक लगें
- चित्र या वीडियो में अजीब रोशनी, धुंधलापन या बेमेल परछाइयाँ
- कोई अन्य विश्वसनीय समाचार माध्यम वही ख़बर नहीं दे रहा

सूत्र एक संकेत भी दिखे, तो रफ़्तार धीमी कीजिए — दो दिखें, तो बिना जाँचे बिल्कुल आगे मत बढ़ाइए।

जाँच में मदद के आधिकारिक साधन।

PIB FACT CHECK · भारत सरकार

भारत सरकार से जुड़े दावों की जाँच करता है — योजनाएँ, आदेश, परिपत्र (Circular)। जैसे "छुट्टी घोषित" या "योजना बंद" वाले संदेश।

WhatsApp +91 87997 11259

वेबसाइट factcheck.pib.gov.in

यह भी कीजिए

किसी दावे के साथ "fact check" लिखकर खोजिए — भरोसेमंद समाचार संस्थाओं की जाँच-टीमें मिल जाएँगी।

विद्यालय में

शिक्षक या पुस्तकालय से पूछिए — साथ मिलकर जाँचना भी एक हुनर है।

ध्यान रहे

फ़ैक्ट-चेक सार्वजनिक दावों के लिए है। आपके साथ हुई ठगी या धमकी के लिए साइबर हेल्पलाइन है — अंत में बताएँगे।

डिजिटल संचार में सत्यनिष्ठा।

आपका हर संदेश आपके हस्ताक्षर जैसा है। थोड़ी-सी सावधानी से आप वह व्यक्ति बनते हैं, जिसकी बात पर लोग भरोसा करते हैं।

04

निशाना तकनीक नहीं — हमारी भावनाएँ होती हैं।

01

अधिकार (Authority)

बड़े पद वाले का रूप धरा जाता है — "प्रधानाचार्य", "बैंक अधिकारी" — ताकि आप बिना सोचे मान लें।

02

अत्यावश्यकता (Urgency)

"अभी करो, वरना देर हो जाएगी" — जल्दबाज़ी का माहौल सोचने का समय छीन लेता है।

03

प्रलोभन (Reciprocity)

मुफ़्त इनाम, मुफ़्त डाउनलोड (Download) — बदले में चुपचाप आपकी निजी जानकारी माँगी जाती है।

04

सामाजिक प्रमाण (Social Proof)

नकली लाइक, नकली प्रशंसा — "सब मान रहे हैं" दिखाकर भरोसा जीता जाता है।

मुख्य बात तेज़ भावना ही संकेत है — जहाँ मन कहे "अभी करो", वहीं दो मिनट रुकिए।

भरोसेमंद संदेश भेजने वाले की पहचान।

अच्छी आदतें

- आगे भेजने से पहले जाँचना
- स्रोत और तारीख़ के साथ साझा करना
- ग़लती हो जाए, तो उसी जगह सुधारना
- जो नहीं मालूम, उस पर "पता नहीं" कहना

नुक़सानदेह आदतें

- बिना पढ़े ही फ़ॉरवर्ड (Forward) करना
- काट-छाँट कर बात आगे बढ़ाना
- "सबको भेजो" वाले संदेशों की होड़
- अफ़वाह में मज़ा लेना — "देखो क्या आया है"

मुख्य बात आपका फ़ॉरवर्ड आपकी ज़मानत है — जो भेजा, उसकी ज़िम्मेदारी भी आपकी है।

जो सामने है, वही हो — यह पक्का कीजिए।

पहचान की नक़ल (Impersonation)

नक़ली प्रोफ़ाइल किसी परिचित — शिक्षक, रिश्तेदार, यहाँ तक कि प्रधानाचार्य — के नाम और फोटो से बन सकती है। संदेश जाना-पहचाना लगता है, **पर भेजने वाला कोई और है।**

माँग हमेशा जल्दबाज़ी की होती है — पैसे, OTP, निजी जानकारी, "अभी करो"।

OTP किसी को नहीं

OTP (One-Time Password) आपकी चाबी है — शिक्षक, बैंक, कोई भी उसे संदेश पर नहीं माँगता।

सीधे पुष्टि कीजिए

संदेह हो, तो उसी व्यक्ति को जाने-पहचाने नंबर पर फ़ोन कीजिए या आमने-सामने पूछिए।

घबराइए मत

जल्दबाज़ी ही चाल की पहचान है। दो मिनट रुकने से कोई नुक़सान नहीं होता — बचत ज़रूर होती है।

ईमेल (Email) और संदेशों में सत्यनिष्ठा।

01

प्रेषक की नक़ल (Spoofing)

"From" नाम जाना-पहचाना दिख सकता है — केवल नाम नहीं, पूरा ईमेल पता जाँचिए।

02

फ़िशिंग के संकेत (Phishing)

जल्दबाज़ी का अनुरोध, अनजान अटैचमेंट (Attachment), बेमेल लिंक।

03

क्लिक से पहले

लिंक पर होवर (Hover) करके असली पता (URL) देखिए — दिखने वाला नाम धोखा दे सकता है।

04

दूसरे रास्ते से पुष्टि

असामान्य अनुरोध की पुष्टि हमेशा किसी अलग, जाने-पहचाने माध्यम से कीजिए।

यह भी

"End-to-End Encrypted" लेबल और ब्राउज़र का ताला (Padlock) रास्ते की सुरक्षा बताते हैं — सामग्री की सच्चाई नहीं।

शेयर (Share) करना भी प्रकाशन है।

संदर्भ का लोप (Context Collapse)

एक जगह के लिए लिखी पोस्ट का स्क्रीनशॉट (Screenshot) कहीं और पहुँचकर बिल्कुल अलग अर्थ दे सकता है।

काट-छाँट

संपादित स्क्रीनशॉट और संदर्भ से बाहर उद्धरण — सोशल मीडिया पर सत्यनिष्ठा टूटने के सबसे आम तरीक़े।

एल्गोरिद्म (Algorithm) का गणित

प्लेटफ़ॉर्म सटीकता नहीं, जुड़ाव (Engagement) देखता है — सनसनी सच से तेज़ दौड़ती है।

शेयर से पहले तीन सवाल

क्या मुझे इसका मूल संदर्भ पता है?
क्या मुझे इसका स्रोत पता है?
क्या मुझे इसकी तारीख़ पता है?

तीनों का उत्तर "हाँ" हो, तभी आगे बढ़ाइए — Share दबाते ही ज़िम्मेदारी की शृंखला में आप भी जुड़ जाते हैं।

आपकी ज़िम्मेदारी

बनिए सूचना-सत्यनिष्ठा के प्रहरी।

01

सजग रचनाकार

जो भी पोस्ट या रिकॉर्ड करें — पहले पक्का कीजिए कि वह सटीक है और स्रोत सही दिया गया है।

02

सजग सत्यापनकर्ता

CRAAP, रिवर्स इमेज सर्च और मेटाडेटा जाँच को रोज़ की आदत बनाइए — केवल "बड़े" दावों के लिए नहीं।

03

सजग साझाकर्ता

हर शेयर (Share) प्रकाशन का छोटा कार्य है — जो फैलाने में मदद की, उसकी ज़िम्मेदारी आपकी।

04

साथियों के शिक्षक

आज जो सीखा, वह मित्रों और परिवार तक पहुँचाइए — असर कई गुना बढ़ जाएगा।

याद रखिए **गलती हो जाए, तो खुले मन से और तुरंत सुधारिए — यही सत्यनिष्ठा की असली पहचान है।**

कुछ गड़बड़ लगे, तो मदद मौजूद है।

साइबर हेल्पलाइन

1930

साइबर ठगी की राष्ट्रीय हेल्पलाइन — पैसों का मामला हो, तो तुरंत कॉल कीजिए।

ऑनलाइन शिकायत

cybercrime.gov.in

किसी भी साइबर अपराध की शिकायत का राष्ट्रीय पोर्टल — नक़ली प्रोफ़ाइल और ठगी सहित।

किसी को बताइए

भरोसेमंद बड़े

माता-पिता, शिक्षक या काउंसलर — सबसे पहला और सबसे सही कदम। बताने पर कोई दोष नहीं देगा।

सबूत सँभालिए

पहले स्क्रीनशॉट, फिर ब्लॉक और रिपोर्ट। कुछ मिटाइए मत — सबूत मदद करने वालों की मदद करता है।

सार

चार विषय, चार आदतें।

विषय 01 सटीक + प्रामाणिक = भरोसेमंद। एक भी कमज़ोर हो, तो पहले जाँचिए।

विषय 02 जानकारी रास्ते में बदल सकती है — मूल (Original) तक जाइए।

विषय 03 रुकिए, CRAAP परखिए, रिवर्स इमेज सर्च कीजिए — फिर मानिए।

विषय 04 आपका फ़ॉरवर्ड आपकी ज़मानत है — OTP किसी को नहीं, पुष्टि सीधे रास्ते से।

सार

चार विषय, चार आदतें।

विषय 01 सटीक + प्रामाणिक = भरोसेमंद। एक भी कमज़ोर हो, तो पहले जाँचिए।

विषय 02 जानकारी रास्ते में बदल सकती है — मूल (Original) तक जाइए।

विषय 03 रुकिए, CRAAP परखिए, रिवर्स इमेज सर्च कीजिए — फिर मानिए।

विषय 04 आपका फ़ॉरवर्ड आपकी ज़मानत है — OTP किसी को नहीं, पुष्टि सीधे रास्ते से।

सत्यमेव जयते
Ministry of Education
Government of India

CyberPeace Corps | with support from Google.org

एन सी ई आर टी
NCERT

सजग रहिए।
सच के साथ रहिए।

कोई प्रश्न? आइए बात करें — ऑनलाइन जो भी ठीक न लगा हो, उस पर भी।

हेल्पलाइन 1930

cybercrime.gov.in

PIB Fact Check · +91 87997 11259